



कटहल की उन्नत खेती

उपेन्द्र यादव¹, विवेक कुमार त्रिपाठी² और स्वरूप मणि¹

कटहल एक महत्वपूर्ण फलदार वृक्ष है, जिसे गर्म और आर्द्र जलवायु वाले क्षेत्रों में व्यापक रूप से उगाया जाता है। यह स्वादिष्ट, सुगंधित और पोषक तत्वों से भरपूर फल है। भारत में इसे पारंपरिक रूप से घरों के आंगन, बगीचों और खेतों की मेड़ों पर लगाया जाता रहा है। इसे “गरीबों का फल” भी कहा जाता है, क्योंकि यह सस्ता, सुलभ और बहुउपयोगी होता है। इसके कोमल फलों का उपयोग सब्जी के रूप में तथा पके फलों का सेवन ताजे फल, जूस, जैम और अचार के रूप में किया जाता है। कटहल, विश्व का सबसे बड़ा फल माना जाता है। इसे बंगाली में कंथाल, तमिल में पला, अंग्रेजी में जैकफ्रूट, गुजराती में फणस और मलयालम में चक्का कहा जाता है। यह उष्णकटिबंधीय फल मोरेसी कुल से संबंधित है। इसका जीनोम चतुर्गुणित ($2n = 4^* = 56$) माना जाता है और इसकी उत्पत्ति भारत के पश्चिमी घाट के वर्षा वनों से मानी जाती है।

कटहल के प्रमुख उत्पादक देशों में बांग्लादेश, म्यांमार, थाईलैंड, वियतनाम, चीन, फिलीपींस, इंडोनेशिया, मलेशिया और श्रीलंका शामिल हैं। विश्व में भारत कटहल का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। देश में ओडिशा इसका प्रमुख उत्पादक राज्य है, जबकि केरल, असोम, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश और दक्षिण भारत के अन्य राज्यों में भी इसकी खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। कटहल भारतीय कृषि और संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

¹शोध छात्र, फल विज्ञान विभाग; ²अधिष्ठाता, उद्यान महाविद्यालय एवं विभागाध्यक्ष, फल विज्ञान विभाग, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर (उत्तर प्रदेश)

कटहल के कच्चे फलों का उपयोग ताजे फल के रूप में किया जाता है। कटहल सब्जी के रूप में और पके फलों का उपयोग का वृक्ष वर्ष में एक बार फल देता है।

उन्नत किस्में

स्थानीय चयनित किस्मों में गुलाबी (गुलाब की आदि वाला), चम्पा (चंपक जैसा स्वाद) और हजारी (बड़ी संख्या में फल देने वाली) हैं। रुद्राक्षी में सामान्य पुमेलो के आकार के फल होते हैं, जिनका छिलका चिकना होता है और उनमें कम कांटे होते हैं, जबकि सिंगापुर (सीलोन जैक) सीलोन से लाई गई अत्यधिक अगेती किस्म है। कभी-कभी यह सितम्बर और दिसम्बर के बीच हल्की ऑफ-सीजन फसल भी उत्पादित करती है। बड़े फलों और उत्कृष्ट गूदे वाली किस्में NJT-1, NJT-2, NJT-3 और NJT-4 जैसे नए चयन फल के रूप में खाने के लिए उपयुक्त हैं, जबकि पतले छिलके वाले छोटे से मध्यम आकार के फलों वाली NJC-1, NJC-2 और NJC-3 सब्जी के लिए काफी उपयोगी हैं। नगालैंड कटहल उत्तर-पूर्व भारत में लोकप्रिय किस्म है, जो स्वाद में लाजवाब होती है। दक्षिण भारत की प्रमुख किस्में-बरिका, कूझा, नवरिकका, टीएनएयू से विकसित किस्में - PLR-1, PPI जैक और PLR(J)-2 आदि हैं।

सामान्यतः फूल नवंबर से मध्य फरवरी तक आते हैं, जो जलवायु, स्थान और किस्म पर निर्भर करते हैं। कोमल (कच्चे) फल बाजार में मार्च से अगस्त तक उपलब्ध रहते हैं, जबकि फल जून-जुलाई में पकना प्रारंभ करते हैं।

महत्व

कटहल एक बहुउद्देशीय फल है जो आहार, लकड़ी, ईंधन, चारा, औषधीय और औद्योगिक उत्पाद भी प्रदान करता है। कटहल का प्राथमिक आर्थिक उत्पाद फल है, जिसका उपयोग अपरिपक्व और परिपक्व दोनों अवस्थाओं में किया जाता है। फल का गूदा मीठा और स्वादिष्ट होता है और इसे मिठाई या सिरप के रूप में संरक्षित करके उपयोग किया जाता है। फलों और बीजों को भी आहार और अन्य उत्पादों के लिए विभिन्न रूप से संसाधित किया जाता है। पाक-कला में, फल के गूदे से विभिन्न प्रकार की करी के अलावा चटनी और पेस्ट सहित विभिन्न स्थानीय स्वादिष्ट व्यंजन बनाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त कटहल का उपयोग पारंपरिक चिकित्सा (पत्तियों, छाल, पुष्पगुच्छ, बीज और लेटेक्स) में भी किया जाता है।

कटहल एक पौष्टिक फल है जो विटामिन ए, बी और सी, पोटेशियम, कैल्शियम, आयरन, प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट से भरपूर है। कार्बोहाइड्रेट के उच्च स्तर के कारण कटहल कुछ क्षेत्रों में खाद्यान्न कमी के समय अन्य स्थिर खाद्य उत्पादों का पूरक बन जाता है।



कटहल से बना पौष्टिक पेय

जलवायु एवं मृदा

कटहल को उष्णकटिबंधीय एवं उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उगाया जाता है, जहाँ तापमान लगभग 22-35° तथा वार्षिक वर्षा 100-240 सें.मी. होती हो। इसे आर्द्र पहाड़ी ढलानों पर 1500 मीटर की ऊँचाई तक भी उगाया जा सकता है। लंबे समय तक सूखा या जलभराव की स्थिति इसकी वृद्धि और विकास के लिए अनुकूल नहीं होती।

कटहल की खेती के लिए गहरी, जलोढ़, रेतीली या दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है, जिसका पीएच मान 6.0-7.5 के बीच हो तथा जल-निकास की उचित व्यवस्था हो। केरल में कटहल को घरों के आँगन में एक महत्वपूर्ण वृक्ष के रूप में तथा कॉफी

बागानों में छायादार वृक्ष के रूप में व्यापक रूप से उगाया जाता है।

प्रवर्धन: कटहल में व्यावसायिक प्रवर्धन के लिए दक्षिण भारत में इनआर्चिंग सर्वाधिक प्रचलित विधि है। इसके लिए आर्टोकार्पस हिर्सुटस को मूलवृत्त के रूप में उपयोग किया जाता है। इसमें युवा मूलवृत्त को मातृ पौधे से बाँधकर मातृ पौधे की चयनित शाखा से ग्राफ्ट कर दिया जाता है।

सामान्यतः कटहल का प्रवर्धन बीज द्वारा भी किया जाता है। यह बहुत सरल एवं सस्ती विधि है। चूँकि बीज बड़े होते हैं, तेजी से बढ़ते हैं और उनकी जड़ प्रणाली रोपाई के दौरान क्षति के प्रति संवेदनशील होती है, इसलिए खेत में सीधे बीज बोने से सर्वोत्तम परिणाम मिलते हैं।

बाग की स्थापना: गर्मी के महीनों (सामान्यतः मई-जून) में 10-12 मीटर की दूरी पर 1×1 मीटर आकार के गड्ढे खोदे जाते हैं। मानसून की पहली वर्षा के बाद गड्ढों को पुनः भरा जाता है। प्रत्येक गड्ढे की मिट्टी में लगभग 30 कि.ग्रा. अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद मिलाकर गड्ढा भर दिया जाता है। पौधों को कीटों के प्रकोप से बचाने के लिए गड्ढे में क्लोरोपाइरीफॉस का प्रयोग किया जाता है। जलभराव से बचाने के लिए मिट्टी को अच्छी तरह दबा दिया जाता है। ग्राफ्ट या बीजू पौधे लगाने का उपयुक्त समय जून से अगस्त है।

देखभाल: युवा पौधों को बकरियों और मवेशियों से बचाना चाहिए। प्रारम्भिक अवस्था में पौधों की अच्छी वृद्धि एवं विकास के लिए

रोग एवं कीट नियंत्रण

गुलाबी रोग: यह पश्चिमी तट और नीलगिरी पहाड़ियों में कटहल में लगने वाला एक गंभीर रोग है। इस रोग में पत्तियों की निचली सतह पर गुलाबी धब्बे तथा तने पर गुलाबी पाउडर दिखाई देता है। इसके प्रबंधन के लिए बोर्डो मिश्रण या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 0.2% का छिड़काव करना चाहिए।

पत्ती धब्बा (फिलोस्टिक्टा आर्टोकार्पिना): यह कटहल का एक सामान्य रोग है। इसमें पत्तियों पर गहरे भूरे रंग के धब्बे बनते हैं, जो बाद में धूसर-भूरे से ईंट जैसे लाल रंग के हो जाते हैं। इसके नियंत्रण के लिए कार्बेण्डाजिम (0.1%) या मैकोजेब (0.3%) का प्रयोग करना चाहिए।

राइजोपस फल सड़न: यह पुष्प एवं फल सड़न का कारण बनता है, जिससे लगभग 15-32% तक फसल हानि हो सकती है। इसके प्रबंधन के लिए बोर्डो मिश्रण (0.5%) या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (0.2%) का पर्णाय छिड़काव करें।

कटहल में तना छेदक, मिलीबग, एफिड आदि कीटों से बचाव के लिए जैविक एवं रासायनिक दोनों उपाय अपनाने चाहिए।



कटहल का अचार

गर्मियों में हाथ से सिंचाई करना आवश्यक है। ठंडे क्षेत्रों में पहले कुछ वर्षों तक पाले से बचाव करना पड़ता है।

पौधों की अच्छी वृद्धि के लिए नियमित निराई-गुड़ाई और मल्लिचंग आवश्यक है। फल तुड़ाई के बाद फल से जुड़े पुष्पवृन्त और टहनियों की छंटाई कर देनी चाहिए, जिससे अगले वर्ष अच्छी फलत हो सके।

खाद एवं उर्वरक प्रयोग: कटहल के पौधों के लिए जैविक खाद जैसे गोबर की सड़ी खाद तथा रासायनिक उर्वरक जैसे यूरिया, सिंगल सुपर फॉस्फेट और म्यूरेट ऑफ पोटाश का उपयोग किया जाता है। प्रत्येक पौधे

को प्रति वर्ष 20-25 कि.ग्रा. गोबर की सड़ी खाद, 100 ग्रा. यूरिया, 200 ग्रा. सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा 100 ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश जुलाई माह में देना चाहिए।

जब पौधे लगभग 10 वर्ष के हो जाएँ, तब प्रति पौधा 80-100 कि.ग्रा. गोबर की सड़ी खाद, 1 कि.ग्रा. यूरिया, 2 कि.ग्रा. सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा 1 कि.ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति वर्ष देना चाहिए। खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग पौधे के मुख्य तने से लगभग 1 मीटर की दूरी पर 25-30 सेंटीमीटर गहरा गड्ढा बनाकर करना चाहिए।

अन्तर्वर्ती फसलें: कटहल के पौधों के बीच अतिरिक्त आय प्राप्त करने के लिए किसान मूंग, उड़द, बैंगन, टमाटर, भिंडी, मेथी, पपीता, अनन्नास, फालसा, अदरक और हल्दी जैसी अन्तर्वर्ती फसलें उगा सकते हैं।

फलों की तुड़ाई एवं उपज: कटहल के फलों की तुड़ाई सब्जी के रूप में उपयोग के लिए शुरुआती बसंत और गर्मियों में, जब तक बीज सख्त न हो जाएँ, की जाती है। पके फल के रूप में उपयोग के लिए जून से तुड़ाई प्रारम्भ होती है।

वृक्ष रोपण के लगभग 15-20 वर्ष बाद प्रति हैक्टर 40-50 टन फल प्राप्त किए जा सकते हैं। अधिकांश किस्मों में एक पेड़ से



कटहल के स्वादिष्ट चिप्स

100-200 फल प्राप्त होते हैं।

मूल्य संवर्धन: पके हुए कटहल के फलेक्स (कोष्ठक) मिठाई के रूप में खाए जाते हैं या विभिन्न रूपों में प्रसंस्करित किए जाते हैं, जैसे डिब्बाबंदी। कटहल से कैंडी, सिरप, जैम, आरटीएस पेय, स्क्वैश, अचार, चिप्स और पापड़ बनाए जाते हैं। कटहल के बीजों को उबालकर, भूनकर, सुखाकर या नमकीन बनाकर मेवे की तरह भी खाया जाता है।

भाकृअनुप की मासिक लोकप्रिय पत्रिका 'खेती' सितम्बर, 2026 अंक के प्रमुख आकर्षण

- ◆ देसी गोवंश आधारित लाभकारी डेरी व्यवसाय
- ◆ मशरूम उत्पादन से बनी सफल उद्यमी
- ◆ पशुधन स्वास्थ्य में लाभकारी इन्फ्रारेड थर्मल इमेजिंग तकनीक
- ◆ रेंबो ट्राउट का वैज्ञानिक पालन एवं प्रजनन
- ◆ बकरियों के मेमनों का वैज्ञानिक प्रबंधन
- ◆ जलवायु अनुकूल मकचरी की वैज्ञानिक खेती
- ◆ कृषक समृद्धि की दिशा में खेत बचाओ अभियान
- ◆ ताड़ उत्पादन से भरपूर संभावनाएं
- ◆ फोग है शुष्क क्षेत्रों का उत्तम पशु चारा

संपर्क सूत्र: प्रभारी, व्यवसाय एकक, भाकृअनुप-कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय, कैब-1, पूसा गेट, नई दिल्ली-110012
दूरभाष: 25843657, www.icar.org.in